†**श्री अ० चं० गुह** (बारसाट) : कार्यवाही की प्रति भी उन्हें भेज दी जाय ।

†**अध्यक्ष महोदय:** यदि दूसरी सूचना उन्हें नहीं मिलती तो कार्यवाही की प्रति के भेजे जाने की आवश्यकता नहीं है । अन्यथा, जहां तक सदस्यों का सम्बन्ध है, वह इस बात पर सहमत है कि अनुपस्थिति की अनुमति दे दी जाय ।

विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्तियों से हुई चर्चा के बारे में वक्तव्य

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्यमंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) :** अध्यक्ष महोदय, पिछले दस दिनों में मित्र देशों के कई उच्च पदाधिकारी देहली आए । आपसी हित के मामलों पर हमने उनसे चर्चा की । श्री अली साबरी, संयुक्त अरब गणराज्य की कार्यपालिका परिषद के प्रधान पीकिंग से काहिरा वापिस जाते हुए २६ अप्रैल की रात को देहली पहुंचे और २७-२८ अप्रैल की रात को यहां से गये । लॉर्ड माउण्टबेटन ३० अप्रैल को देहली पहुंचे और तीन मई को यहां से चले गए । श्री डंकन सैंड्स ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलीय मंत्री पहली मई से चार मई तक यहां रहे । विदेशी परराष्ट्रमंत्री श्री डीन रस्क, जिन के साथ श्री फिलिप्स टैलवर और श्री विलियम बंडी थे २ से ४ मई तक के लिए देहली में थे । इन यात्राओं के अतिरिक्त अप्रैल के पिछले दस दिनों में भारत और पाकिस्तान में काश्मीर तथा अन्य सबंधित विषयों पर बातचीत का पांचवां दौर हुआ । इसी अवधि में हमारे आर्थिक और प्रतिरक्षा समन्वय मंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी सद्भावना यात्रा पर न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया गए । इस सम्बन्ध में कई अविलम्बनीय लोक महत्व के विषयों की ओर ध्यान दिलाने वाली सूचनाएं आईं । मैं इस समय मोटे तौर पर इन विदेशी उच्च पदाधिकारियों से हुई बातचीत के बारे में बताऊंगा । चूंकि ऐसी बातचीतें गोपनीय समझी जातीं हैं, अतः मैं ब्यौरा नहीं दे सकता ।

भारत और पाकिस्तान में बातचीत

भारत सरकार पाकिस्तान के साथ काश्मीर तथा अन्य मामलों के हल करने के लिए और पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण संबन्ध रखने के लिए चिन्तित रही है । मेरे सहयोगी सरदार स्वर्णसिंह रेलवे मंत्री ने जो कि भारत प्रतिनिधिमण्डल के नेता हैं, पिछले कुछ महीनों में भारत-पाकिस्तान की बात चीत में इस उद्देश्य की पूर्ति करने की कोशिश की है । पाकिस्तान की ओर से उत्तेजित करने वाले वक्तव्यों के बावजूद उन्होंने बहुत शांति से बातचीत की और कई कठिनाइयों को उन्होंने पाकिस्तान के साथ मित्रता को प्रोत्साहन देने के रास्ते में आने नहीं दिया । खेद है कि बात चीत के पांच दौर हो चुके हैं लेकिन उन पर कोई संतोषजनक परिणाम नहीं निकला है और पाकिस्तान के साथ अब भी मतभेद है । इन कठिनाइयों तथा विफलताओं के बावजूद हम भारत-पाकिस्तान के मतभेदों को दूर करने और मैत्री पूर्ण सम्बन्ध बढ़ाने के लिये अपने प्रयत्न जारी रखने के लिये दृढ़ निश्चय है । इस सम्बन्ध में मैं पाकिस्तान के समक्ष अपने अनाक्रमण संधि प्रस्ताव को दोहराता हूं । हमारे इन प्रस्तावों का पाकिस्तान ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया । पिछले अक्टूबर में मैंने श्री अय्यूब खां को अपने पत्र में अपनी प्रतिरक्षा शक्ति को चीनी खतरे का मुकाबला करने के लिए बढ़ाने के बारे में उल्लेख किया और यह भी कहा कि चीनी अतिक्रमण का मुकाबला करने के अतिरिक्त अन्य काम के लिए

---

† मूल अंग्रेजी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

इस शक्ति का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। मैंने उन्हें यह आश्वासन भी दिया कि पाकिस्तान के साथ कोई झगड़ा करना हमें पसन्द नहीं था और मैंने यह विश्वास व्यक्त किया कि भारत और पाकिस्तान का भविष्य उनकी दोस्ती और भविष्य में निहित है। आशा है कि सभा इन भावनाओं पर पुनः बल देने का समर्थन करती है।

भारत और चीन में विवाद

श्री अली साबरी ने चीनियों की विचारधारा के बारे में अपना अनुमान बताया। उनके साथ बातचीत में हमने अन्दाज़ा लगाया कि चीन सरकार कोलम्बो प्रस्तावों को कार्यान्वित करने के लिए तैयार नहीं है। वे सीमा विवाद के बड़े प्रश्न के बारे में इस आधार पर बातचीत करने के लिए तैयार है कि वे कोलम्बो प्रस्तावों को नियमरूप से स्वीकार करते हैं। इसका मतलब यह है कि चीन अपने आप बनाई हुई स्थिति को कायम रखना चाहता है और पश्चिमी भाग के विसैन्यीकृत क्षेत्र में दोनों देशों की उपस्थिति को पुनः कायम करने के लिये मानने को तैयार नहीं हैं। चीन सरकार अपने अतिक्रमण द्वारा परिवर्तित स्थिति के आधार पर सीमा विवाद का बातचीत द्वारा समझौता चाहती है।

यह स्पष्ट है कि हम चीन सरकार से सीमान्त के मुख्य प्रश्न सम्बन्धी मतभेद के विषय पर तब तक कोई बातचीत नहीं कर सकते जब तक कि वह देश कोलम्बो प्रस्तावों को बिना संकोच स्वीकार नहीं कर लेता तथा भूमि पर उन प्रस्तावों में की गई सिफारिशों को अमल में नहीं लाता। हमने इस सम्बन्ध में चीन को भेजे गए अपने ३ अप्रैल के नोट में रचनात्मक सुझाव दिए। मैं नोट की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं। अभी तक इस नोट का विशिष्ट उत्तर नहीं मिला।

चीन के विचारों के सम्बन्ध में जो श्री अली साबरी ने बतलाया उसका समर्थन प्रधान मंत्री चू-एन-लाई का २० अप्रैल का पत्र करता है। इस पत्र का उत्तर मैंने पहली मई को दिया। इन पत्रों को सभा पटल पर रख रहा हूं।

पिछले अक्तूबर तथा नवम्बर में प्राप्त अनुभव को तथा चीन की कोलम्बो प्रस्तावों सम्बन्धी जारी हठ तथा लगातार भारत विरोधी विचार को ध्यान में रखते हुए इस बात को स्पष्ट करने के लिये मैं दिनांक २७ अप्रैल के चीनी नोट और अपने उत्तर की प्रतियां सभा पटल पर रख रहा हूं हमें किसी भी संकट के लिये तैयार होना पड़ेगा। अतः चीन द्वारा पुनः आक्रमण की सम्भावना के विचार से हमारी प्रतिरक्षा क्षमता का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उस विषय में हमें दृढ़ संकल्प और उद्देश्य के प्रति निष्ठा से कार्यवाही को करना होगा।

इस सम्बन्ध में मैं श्री टी० टी० कृष्णमाचारी की हाल की न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया की यात्रा का ज़िक्र करना चाहता हूं। इन यात्राओं में श्री कृष्णमाचारी इन दोनों देशों के प्रधान मंत्रियों और उनके साथियों से मिले। इन अनौपचारिक और मित्रतापूर्ण बातचीतों से वे देश साझे हितों के मामले में भारत के निकट हो चुके हैं। आस्ट्रेलिया की यात्रा में श्री टी० टी० कृष्णमाचारी के साथ मंत्रिमण्डल सचिव थे और इस समय प्रतिरक्षा उपकरणों तथा संगत प्रश्नों पर चर्चा की गई। उस बातचीत के बाद आस्ट्रेलिया को "भारतीय टैक्नीकल टीम" जायेगा तथा सम्भवतः बाद में आस्ट्रेलिया से वैसी ही टीम भारत आयेगी जिस का संबंध प्रतिरक्षा के सामान के उत्पादन से होगा तथा उस दिशा में कार्यक्रमों की पूर्ति के लिए आस्ट्रेलिया से सहयोग का प्राप्त करना होगा।

श्री डंकन सैण्ड्स और लार्ड माउंटबेटन की यात्रा

लार्ड माउण्टबेटन ने अक्तूबर १९६२ में भारत आना था। कैरेबियन में संकट के कारण उन की यात्रा स्थगित कर दी गई। हमें अपने पुराने मित्र से मिल कर बड़ी खुशी हुई और आपसी समस्याओं पर उन से विचारों का आदान प्रदान किया। ब्रिटिश प्रतिरक्षा कर्मचारी वृन्द के प्रमुख के रूप में, लार्ड माउण्टबेटन हमारी प्रतिरक्षा समस्या के बारे में निकटतम रूप से सम्बद्ध रहे हैं। उन्होंने चीन के अतिक्रमण का सामना करने के लिये प्रतिरक्षा क्षमता की निर्माणार्थ प्रतिरक्षा उपकरणों के उत्पादन व मशीनों की व्यवस्था दोनों के बारे में हमारी आवश्यकताओं के बारे में बातचीत की थी। उन्होंने सामान्य रूप से इन मामलों पर मेरे साथ, प्रतिरक्षा मंत्री और विभिन्न सेनाध्यक्षों के साथ बहस की थी। राष्ट्रमण्डल सम्बन्धों के "सैक्रेटरी आफ स्टेट" श्री डंकन सैण्ड्स ने हमारे साथ हमारी प्रतिरक्षा आवश्यकताओं के सामान्य प्रश्न, काश्मीर सम्बन्धी मंत्री-स्तरीय भारत-पाकिस्तान वार्ता की प्रगति तथा अन्य सम्बद्ध विषयों पर चर्चा की। इस बातचीत के दौरान उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि काश्मीर समस्या के समाधान का भारत को चीनी आक्रमण का सामना करने के लिए सैनिक सहायता से कोई सम्बन्ध नहीं। तथापि उन्होंने यह बताया कि भारत और पाकिस्तान के परस्पर मतभेदों को हल करने से ब्रिटेन का कार्य काफी आसान हो जाएगा और उन्होंने यह आशा अभिव्यक्त की कि भारत और पाकिस्तान के परस्पर मतभेद दूर करने की बातचीत में सफलता होगी।

ब्रिटिश पुर्जों के संभरण की कमी के कारण भारतीय वायुसेना के विमानों के न उड़ सकने के बारे में समाचार पत्रों में समाचार छपे हैं, क्योंकि ब्रिटिश संसद में इसके बारे में प्रश्न पूछा गया था। जब कि कुछ वायुयान अस्थायी रूप से नहीं काम दे रहे हैं, यह अस्थायी कठिनाई शीघ्र ही हल हो जाएगी, क्योंकि सभी सम्बन्धित व्यक्ति इस मामले में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। हमारे विमानों के लिये ब्रिटिश निर्मित पुर्जों की आवश्यकता की पूर्ति प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण की जा रही है। चूंकि भारतीय वायुसेना के पास जो ब्रिटिश विमान है वैसे अब नहीं बनाए जाते हैं, अतः रायल एयर फोर्स और ब्रिटिश निर्माताओं के पास संभरण की उपलब्धि मुख्य कठिनाई रही है।

डीन रस्क की यात्रा

"अमरीकी सैक्रेटरी आफ स्टेट" के साथ बातचीत में भारत और अमरीका के हितों के कई मामलों पर चर्चा हुई। श्री रस्क ने चीनी आक्रमण का सामना करने के लिये भारत को अमरीकी सहानुभूति और समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि चीनी धमकी के आगे झुकने का कोई प्रश्न नहीं उठता तथा भारत पाकिस्तान के मतभेदों का समाधान करने से, जिन में काश्मीर विवाद भी शामिल है, अमरीकी सहायता का कोई सम्बन्ध नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि जहां तक अमरीका का सम्बन्ध है, उनका दृष्टिकोण यह है कि चीन का आक्रमण और उस देश की विस्तारवादी नीति सारे महाद्वीप के लिये खतरा है और इस पृष्ठभूमि में वे चाहते हैं कि भारत और पाकिस्तान में मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास हो। मैंने "सैक्रेटरी आफ स्टेट" श्री डीन रस्क से कहा कि भूगोल, इतिहास और संस्कृति की सांझी शृंखला से यह अनिवार्य हो गया है कि भारत और पाकिस्तान में सहकारितामय और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहें। काश्मीर समेत हमारे वर्तमान विभेदों के समाधान में हमें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि मतभेदों को सुलझाने की पद्धतियां और रूपरेखा का मुख्य उद्देश्य मतभेद हल करना ही नहीं अपितु भारत और पाकिस्तान में सहयोग और मित्रता के भाव बढ़ाना है। यह महत्वपूर्ण बात है कि सहसा कोई ऐसा काम नहीं किया जाना चाहिये जिस

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

से प्रगति होने के स्थान पर दोनों देशों के बीच स्थिति खराब हो। इस पृष्ठभूमि में और चीन से खतरे की पृष्ठभूमि में हम अमेरिका और अन्य देशों को जो हमारी समस्याओं का मुकाबला करने के लिए हमारी सहायता कर रहे हैं, दिलचस्पी का स्वागत करते हैं।

तकनीकी दल की अमेरिका कैनेडा और इंग्लैंड की यात्रा

हमारी प्रतिरक्षा आवश्यकताओं के सिलसिले में तकनीकी विशेषज्ञों का एक सरकारी दल पिछले तीन सप्ताहों में अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड गया। ५ तारीख प्रातः दल वापिस देहली आया। "सैक्रेटरी आफ स्टेट" श्री डीन रस्क ने हम बताया कि अमरीकी अधिकारी शासनिक विशेषज्ञों के बीच हुई बातचीत के सिलसिले में अग्रेतर बातचीत और चर्चा करने के लिये श्री टी० टी० कृष्णमाचारी के अमरीका जाने का स्वागत करेंगे। मुझे हाल ही में श्री मैकमिलन का पगाम मिला कि जिस में अन्य बातों के साथ उन्होंने यह भी कहा कि श्री टी० टी० कृष्णमाचारी की इंग्लैंड की शीघ्र यात्रा लाभदायक होगी। श्री कृष्णमाचारी कुछ ही दिनों में अमरीका, कैनाडा और इंग्लैंड के दौरे पर जाएंगे।

इस वक्तव्य में मैंने पिछले कुछ सप्ताहों में हुई प्रगतियों और मित्र देशों के विशिष्ट प्रतिनिधियों से हुई चर्चाओं का मोटे तौर पर जिक्र किया है। जब कि हम मित्र देशों से जो भी सहायता हमें मिल सकी उस से चीन के आक्रमण मुकाबले में अपनी सुरक्षा करने तथा अपनी क्षेत्रीय अखण्डता की रक्षा करने के लिए आवश्यक उपाय कर रहे है; शान्ति तथा शान्तिपूर्ण उपायों के लिए हमारी श्रद्धा और और सब देशों के साथ, विशेषकर हमारे निकटवर्ती पड़ौसी देशों के साथ मैत्री तथा सहयोगात्मक सम्बन्ध बनाए रखने की हमारी इच्छा देश की विदेश नीति के मार्ग दर्शन करने वाले सिद्धांत बने रहेंगे। हम अपने स्वभाव अनुसार स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता से अपना विकास करना चाहते है। हम पक्षपात-रहित स्वतन्त्र रूप से गुण दोष के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर निर्णय करेंगे। हम किसी दूसरे देश के मामलों में हस्तक्षेप करना नहीं चाहते और न ही किसी देश की एक इंच भी भूमि लेने की इच्छा रखते हैं। साथ-साथ हम अपने मामलों में कोई हस्तक्षेप या अपने क्षेत्र पर किसी प्रकार का अतिक्रमण नहीं होने देंगे।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : मैं स्पष्टीकरण चाहता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं प्रत्येक दल को एक प्रश्न पूछने दूंगा। सब सदस्यों को इतने मामलों पर प्रश्न पूछने की अनुमति देना कठिन है।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : भारत और पाकिस्तान में बातचीत का अगला दौर कब और कहां होगा। क्या श्री स्वर्णसिंह और श्री भुट्टो में हुई बातचीत के दौरान में कोई प्रस्ताव किया गया था कि प्रधान मंत्री और पाकिस्तान के प्रधान की बैठक हो और यदि हां, तो उस का क्या ठोस निष्कर्ष निकला।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मेरे विचार में भारत-पाक वार्ता का अगला दौर देहली में होगा और इस महीने की १५ तारीख से होगा। क्या मैं सही हूं ?

†**रेलवे मंत्री (श्री स्वर्णसिंह)** : हां।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : प्रधान अय्यूब और मेरी बैठक की बात बड़ी देर से उड़ रही है, परन्तु हाल में या बातचीत के दौरान में कोई विशिष्ट प्रस्ताव नहीं रखा गया। मैं तो हमेंशा मिलने के लिए तैयार हूं ।

†**श्रीमती रेणु चक्रवर्ती** (बैरकपुर) : क्या बातचीत में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि काश्मीर को घाटी के विभाजन के बारे में हमारा वही निर्णय है जो कि काश्मीर की नैशनल कान्फ्रेंस के संकल्प में है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू**: काश्मीर नेशनल कांफ्रेंस का संकल्प मेरे सामने नहीं था। मेरे विचार में मेंने कल रात इसे पढ़ा। हमने बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि काश्मीर की घाटी के विभाजन का कोई भी विचार हानिकारक होगा। और हमें इसे स्वीकार नहीं करगे।

†**श्री नरसिम्हा रेड्डी** : (राजमपेर) : क्या पश्चिमी कूटनीतिज्ञों के साथ बातचीत से उन्हें इस बात का आभास मिला कि यदि पाकिस्तान के साथ हमारा समझौता हो जाए तो शस्त्रों के सम्भरण को वर्तमान गति तेज हो जाएगी।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू**: अमरीका और इंग्लैंड के दोनों प्रतिनिधियों ने हमें विशिष्ट रूप से बताया कि सैनिक सामान आदिके सम्बन्ध में हमें सहायता देने का भारत-पाकिस्तान के मामलों में कोई सम्बन्ध नहीं। साथ ही उन्होंने बताया कि वे समझौते का स्वागत करेंगे और उन्हें आसानी होगी।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिघवी** (जोधपुर) : क्या प्रधान मंत्री बता सकते है कि अमरीका और इंग्लैंड में हमारी प्रतिरक्षा को मजबूत करने के सम्बन्ध में सहायता जारी रखने में दिलचस्पी में कमी नहीं हुई है और क्या हमारी वायुसेना को मजबूत करने की आशाएं पहले से अधिक अच्छी है।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मेंने यह सब कुछ अपने वक्तव्य में बता दिया है।

†**श्री उ० म० त्रिवेदी** (मन्दसौर) : क्या पाकिस्तान के साथ बातचीत में उन्हें यह बता दिया गया कि काश्मीर के विभाजन की मांग का पाकिस्तान द्वारा परित्याग दोनों देशों के लिए हितकारक होगा ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : हमने न केवल उन्हें ऐसा नहीं बताया परन्तु हम माननीय सदस्य के सुझाव के विरुद्ध है।

†**कुछ माननीय सदस्य** : उठे।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं और प्रश्नों को अनुमति नहीं दूंगा।

ईसाई विवाह तथा वैवाहिक वाद विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति

सदस्य की मृत्यु के कारण हुई रिक्ति का भरा जाना

†**श्रीमती रेणु चक्रवर्ती** : (बैरकपुर) : मैं प्रस्ताव करती हूं :—

"कि यह सभा राज्य सभा से सिफारिश करती है कि राज्य सभा ईसाई विवाह तथा वैवाहिक वाद विधेयक १९६२ सम्बन्धी संयुक्त समिति में श्री थामस, श्री निवासन की मृत्यु

---

†मूल अंग्रेजी में